अध्याय

3

उत्तरदाताओ की सामाजिक,आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

उत्तरदाताओ की सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक पृष्ठभूमिः—

व्यक्ति का व्यवहार तथा मनोवृत्ति को सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक पृष्ठभूमि काफी प्रभावित करती है। व्यक्ति जिस वातारवरण मे रहता है उसी के अनुरुप उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। क्योकि समाज मे प्रचलित व्यवहार प्रतिमान, मूल्यो, प्रथाओ आदि से उसके व्यवहार प्रतिमान निर्धारित होते है। और उसी के अनुरुप अपने भूमिका का निर्वाह करते है। प्रारम्भ मे सामाजिक व्यवस्था मे परम्परागत मूल्यो की प्रधानता थी। किन्तु अब आधुनिक युग में प्रौद्योगिकी मूल्यो ने व्यक्ति को तर्क संगत बना दिया है। तथा यह व्यक्ति को परम्परागत तथा आधुनिक मूल्यो मे समाहित कर दिया है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था मे मुस्लिम समुदाय की प्रस्थिति अनेको निषेधो और आदर्शो द्वारा निर्धारित होती है। इन बदलते परिवेश मे सरल तथा आधुनिक समाजो मे असमान्जस्य एक स्वाभाविक घटना है। आधुनिक प्रौद्योगिकी ने मुस्लिम समाजो के नवीन मूल्यो आदर्शो को अपनाने के लिए प्रेरित किया है। यह सत्य है कि मुसलमानो की सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि मे राजनैतिक मूल्य और राजनैतिक सहभागिता को अलग नही किया जा सकता।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे हमारा उद्देश्य मुसलमानो मे जाति सम्बन्धी होने वाले परिवर्तन का अध्ययन करना है कि इस बदलती हुई सामाजिक परिवेश की प्रक्रिया मे उनके क्रिया कलापो, सामाजिक व्यवहारो, रीतिरीवाजो मे परिवर्तन हुआ है।

प्रस्तुत अध्याय मे उत्तरदाताओ की जातिगत, आयुगत, आयगत, मकान की बनावट, परिवार के सदस्यो की संख्या राजनैतिक दलों, नगरीय सम्पर्क, पत्र पत्रिकाओ, भू— आकार, शैक्षणिक

प्रस्थिति, व्यवसायिक प्रस्थिति, राजनैतिक जागरुकता पृष्ठभूमि की चर्चा की गयी है।

जातिगत प्रस्थिति और उत्तरदाताओ संख्याः—

भारत एक विभिन्न जातियो वाला देश है। यहॉ के कण—कण मे जाति व्यवस्था विद्यमान है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था मे जाति एक महत्वपूर्ण तत्व है। यहाँ तक की यह हिन्दू समुदायो के साथ—साथ कई अहिन्दू समुदायो को भी प्रभावित किया है। यहॉ तक की मुस्लिम समुदाय भी इससे अछुता नही है। वर्तमान मे मुस्लिम समुदायो मे भी विभिन्न जातिया बन गयी है। प्रारम्भ मे इनमे जाति का विभाजन तो था लेकिन इनमे भेदभाव सम्बन्धी व्यवहार को स्वीकार नही किया जाता था। लेकिन अब इनमे भी हिन्दू की भॉति भेदभाव पनपने लगे। जबकि इस्लाम के अनुसार सभी व्यक्ति बराबर है। कुरान मे ऊॅच नीच को नही स्वीकार किया गया है। परम्परागत सामाजिक व्यवस्था मे जातिगत सामाजिक प्रस्थिति और राजनैतिक शक्ति संरचना का परिचायक है। इसका अपना एक अलग सामाजिक—सांस्कृतिक और धार्मिक, राजनैतिक वातावरण रहा है। वास्तव मे कोई भी सामाजिक अध्ययन जातीय विश्लेषण के अध्ययन के वगैर अधुरा रहता है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे मैने उत्तरदाताओ को जातिगत प्रस्थिति के आधार पर पॉच वर्गो मे विभाजित किया है।

(1) उच्च जातिगत प्रस्थिति
(2) उच्च मध्यम जातिगत प्ररिथति
(3) मध्यम जातिगत प्रस्थिति
(4) निम्न जातिगत प्रस्थिति
(5) निम्नतम जातिगत प्रस्थिति

उत्तरदाताओ की जातिगत प्रस्थिति		
उत्तरदाताओ की जातिगत प्रस्थिति	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
उच्च जाति	73	24.3
उच्च मध्यम	79	26.3
मध्यम	61	20.3
निम्न	59	19.6
निम्नतम	20	9.3
योग	300	100

उच्च जाति– सैयद, शेख, मुगल, पठान

उच्च मध्यम– कुरैशी राकी, मोमिन अन्सार, किसान, सैफी

मध्यम– धुनिया, राईन, हासमी, मनिहार, नाई, दर्जी, रंगरेज

निम्न– गुर्जर, डफाली, नियारगट, भटियारा, भड़यूजा, बंजारा, मिरासी, तेली, फकीर, कब्रखोदू

निम्नतम– धोबी, नट, मोची, मेरतर

यहाँ मध्यम जाति को उच्च मध्यम तथा मध्यम, मे और निम्न जाति को निम्न तथा निम्नतम जाति के रुप मे विभाजित कर दिया गया है। क्योकि शोध अर्न्तवस्तु की दृष्टि से इनका महत्व बहुत अधिक है। ये जातियां अपने सामाजिक जातिगत और आर्थिक, राजनैतिक प्रस्थिति मे परिवर्तन के लिए अधिक अभिरुचि रखती है।

उपरोक्त तालिका द्वारा स्पष्ट होता है कि उच्च जाति के 24.3 प्रतिशत, उच्च मध्यम जाति के 26.3 प्रतिशत, मध्यम जाति के 20. 3 प्रतिशत, निम्न जाति के 19.6 प्रतिशत और निम्नतम जाति के 9.3 प्रतिशत उत्तरदाता है।

शैक्षणिक प्रस्थिति और उत्तरदाताओं की संख्या –

शिक्षा समाजीकरण का एक अभिन्न अंग है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का समाजीकरण तथा सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास सम्भव है। शिक्षा ग्रहण करने के बाद व्यक्ति मे उचित और अनुचित का बोध होता है। शिक्षा प्राप्ति के उपरान्त ही वह अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है। तथा अपने आप को समाज के अनुरुप ढालता है। आज के नवीन अविष्कारिक युग मे शिक्षा के वगैर दुनिया मे एक कदम आगे बढ़ना मुश्किल कार्य है। पंचायत के माध्यम से या अन्य शिक्षा समितियो के माध्यम से जन–जन तक शिक्षा पहुचाने का कार्य किया जा रहा है। मुसलमानो मे शिक्षा की बहुत कमी है। मुसलमानो मे शिक्षा आज भी चहारदिवारी तक ही सिमित है। आज भी मुस्लिम परिवार के लोग उच्च शिक्षा दिलाने मे कतराते है। बच्चो को कम उम्र मे ही व्यवसाय या छोटी–मोटी कम्पनियो मे कार्य करने के लिए भेज देते है। मुस्लिम परिवार मे तो लड़के उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेते है। लेकिन लड़किया चाहते हुए भी उच्च शिक्षा प्राप्त नही कर पाती है। अभिभावकगण अपनी पुत्रीयो को स्कूलो, कालेजो मे भेजना नही चाहते है। जबकि सर सैयद अहमद खॉ ने कहा था कि मुसलमानो यदि अपना विकास चाहते हो तो अंग्रेजी और आधुनिक शिक्षा पद्वति से जोड़ो। इन शिक्षा के माध्यम से अपना विकास सम्भव है। इन्ही भावनाओ से उत्पन्न होकर उन्होने मुसलमानों को शिक्षा प्रदान करने के लिए अलीगढ़ विश्वविद्यालय कि स्थापना की थी। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति मे नैतिकता का गूण समाहित होता है। संविधान के अनुच्छेद (29) और (30) मे संस्कृति और शिक्षा सम्बन्धी अधिकारों को मूल अधिकारो के रुप मे मान्यता दी गयी है। ये अधिकार विशेषकर मुस्लिम समुदाय के सन्दर्भ मे है। अनुच्छेद 29 के खण्ड 1 मे यह उपवन्धित है कि भारत के राज्य क्षेत्र अथवा उसके किसी

भाग के निवासी नागरिको के किसी भी भाग को जिसकी अपनी विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति है उसको बनाये रखने का अधिकार होगा।[1]

शिक्षा के क्षेत्र मे भारतीय मुसलमान काफी पिछड़ा हुआ है। निःसन्देह इस समुदाय को शैक्षणिक रुप से पिछड़े समुदाय की कोटि मे रखा जा सकता है। मद्रास उच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायधीश वशीर अहमद सईद के अनुसार जिन्होने 1973 मे दिल्ली मे आयोजित आल इण्डिया मुस्लिम कन्वेशन की अध्यक्षता की थी। केवल दस प्रतिशत मुस्लिम पुरुष तथा आधा प्रतिशत से भी कम मुस्लिम महिलायें 1971 मे साक्षर थी।

जिसका तात्पर्य यह है कि जब भारतीय समाज मे साक्षरता 30 प्रतिशत थी तब उसी समाज के एक समुदाय मुस्लिम समुदाय की साक्षरता 6 प्रतिशत से भी कम थी।[2]

मुस्लिम मुदाय मे शैक्षणिक प्रस्थिति मे वर्तमान समय मे उन्नयन हुआ है। शिक्षा के विकास के कारण ही लोगो के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रो के काफी परिवर्तन है जो जातीय गतिशीलता मे सहायक है।

1— त्रिपाठी प्रोफेसर प्रद्युम्मन कुमार— भारतीय संविधान के प्रमुख तत्व, विधि, साहित्य प्रकाशन नयी दिल्ली 1981 पी 304

2— घोष एस0 के0— मुस्लिम इन इण्डियन डेमोक्रेसी आशीष, पब्लिशिंग हाउस नयी दिल्ली 1984 पी 461

प्रस्तुत अध्ययन मे मैने शैक्षणिक प्रस्थिति के आधार पर उत्तरदाताओ को चार भागो मे विभाजित किया है।

(1) शिक्षित एवं प्राइमरी

(2) जूनियर तथा हाईस्कूल

(3) इण्टरमीडिएट

(4) स्नातक एवं इसके उपर

शैक्षणिक प्रस्थिति और उत्तरदाताओ की संख्या–

उत्तरदाताओ की शैक्षणिक प्रस्थिति	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
शिक्षित एवं प्राइमरी	94	31.3
जूनियर तथा हाईस्कूल	77	25.6
इण्टरमीडिएट	68	22.6
स्नातक एवं इसके उपर	61	20.3
योग	300	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि शिक्षित एवं प्राइमरी वर्ग के 31.3 प्रतिशत जूनियर तथा हाईस्कूल 25.6 प्रतिशत इण्टरमीडिएट 22.6 प्रतिशत तथा स्नातक एवं इसके उपर के 20.3 प्रतिशत उत्तरदाता है।

भू– आकार (एकड़ मे) और उत्तरदाताओ की संख्या–

ग्रामीण समाज मे व्याप्त सामाजिक विषमता का संस्तरणात्मक स्वरुप भू–आकार से निर्धारित होता रहा है। निजी भू आकार को उच्च सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति और राजनैतिक शक्ति प्राप्त रही है। तो भू व्यवस्था मे संलग्न अन्य व्यक्तियो को क्रमशः निम्न सामाजिक, आर्थिक, प्रस्थिति और शक्ति संरचना प्राप्त हो रही है। वस्तुतः परम्परागत ग्रामीण समाज मे भू–स्वामी और भूमिहीन दो वर्ग रहे है। भू स्वामित्व ही सामाजिक, आर्थिक प्रस्थिति और शक्ति संरचना का निर्धारक रहा है। इसमे परिवर्तन से सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति और शक्ति संरचना के प्रतिमान वदले है। इन परिवर्तनो ने जातीय तथा व्यवसायिक गतिशीलता को प्रोत्साहित किया है।

प्रस्तुत अध्ययन मे मैने भू– आकार के आधार पर उत्तरदाताओ को पॉच वर्गो मे विभाजित किया है।

(1) 0–1 एकड़– इसके अर्न्तगत भूमिहीन तथा एक एकड़ भूमि वाले उत्तरदाताओ को सम्मिलित किया गया है।

(2) 1–2.50 एकड़– इसके अर्न्तगत 1–2.50 एकड़ भूमि वाले उत्तरदाताओ को सम्मिलित किया गया है।

(3) 2.50–3.50 एकड़– इसके अर्न्तगत 2.50–3.50 एकड़ भूमि वाले उत्तरदाताओ को सम्मिलित किया गया है।

(4) 3.50–5.00 एकड़– इसके अर्न्तगत 3.50 से 5 एकड़ भूमि वाले उत्तरदाताओ को सम्मिलित किया गया है।

(5) 5.00 एकड़ से अधिक– इसके अर्न्तगत 5.00 एकड़ से अधिक भूमि वाले उत्तरदाताओ को सम्मिलित किया गया है।

भू– आकार (एकड़ मे) और उत्तरदाताओ की संख्या–

भू–आकार (एकड़ मे)	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
0–1	79	26.3
1–2.50	103	34.3
2.50–3.50	68	22.6
3.50–5.00	34	11.3
5 से अधिक	16	5.3
योग	300	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 0–1 एकड़ भमिवाले 26.3 प्रतिशत उत्तरदाता है। तथा 1–2.50 एकड़ भूमिवाले 34.3 प्रतिशत, 2.50 से 3.50 एकड़ वाले 11.3 प्रतिशत तथा 5 से अधिक एकड़ भूमि वाले 5.3 प्रतिशत उत्तरदाता है।

परिवार का आकार और उत्तरदाताओं की संख्या–

परिवार सामाजिक और व्यक्तिगत दोनो दृष्टिकोण से समाज की एक आधारभूत इकाई है। परिवार के अभाव मे समाज की निरन्तरता सम्भव नही है। यह सांस्कृतिक विकास के किसी भी स्तर पर रहा है। परिवार ही व्यक्ति के समाजीकरण की प्राथमिक इकाई है। इससे

ही व्यक्ति के व्यवहार, प्रतिमान निर्धारित होते है। इसी से ही सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होते रहते है। ये सामाजिक विषमता को स्थायी बनाये रखने मे महत्वपूर्ण है। यह एक सशक्त सामाजिक संस्था है। यह व्यक्ति की सामाजिक मनोवैज्ञानिक और जैविकी आवश्यक्ताओ की पूर्ति करता है। परिवार आकार से व्यक्ति की मानसिकता और उसके सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य निर्धारित होते है। आधुनिक समाज व्यवस्था मे लघु परिवार उच्च मानदण्ड प्रस्थापित करने मे महत्वपूर्ण है। इससे जातीय गतिशीलता का होना स्वाभाविक है। वस्तुतः यह जातीय गतिशीलता के अध्ययन मे अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मैने संयुक्त परिवार को महत्व नही दिया है। क्योकि इसमे परिवार की सदस्य संख्या निश्चित नही होती है। अतः प्रस्तुत अध्ययन मे परिवार के आकार का निर्धारण परिवार के सदस्य संख्या के आधार पर किया है। इसमे किसी भी प्रकार का विभेद स्थापित नही किया गया है।

परिवार के सदस्य संख्या के आधार पर परिवार आकार को तीन भागो मे विभाजित किया है।

(1) <u>लघु आकार</u>– इसके अर्न्तगत 05 या इससे कम सदस्यो वाले परिवार को सम्मिलित किया गया है।

(2) <u>मध्यम आकार</u>– इसके अर्न्तगत 6 से 11 सदस्यो वाले परिवार को सम्मिलित किया गया है।

(3) <u>वृहद आकार</u>– इसके अर्न्तगत 12 से उपर सदस्यो वाले परिवार को सम्मिलित किया गया है।

परिवार के सदस्यो की संख्या और उत्तरदाताओ की संख्या–

परिवार के सदस्यो की संख्या	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
0–5	86	28.6
6–11	116	38.6
12 से उपर	98	32.6
योग	300	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 0–5 सदस्यो वाले उत्तरदाताओ का प्रतिशत 28.6 प्रतिशत है तथा 6–11 सदस्यो वाले उत्तरदाताओ का प्रतिशत 38.6, 12 से उपर सदस्यो वाले 32.6 प्रतिशत उत्तरदाता है।

मकान की बनावट और उत्तरदाताओ की संख्या–

आवास का व्यक्ति के व्यक्तित्व पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। आवास व्यक्ति के सुख शान्ति से रहने तथा शारिरीक, मानसिक थकान को दूर करने का एक सुरक्षित स्थान होता है। यहॉ तक की आवास सामाजिक प्रतिष्ठा का सूचक है। आवास के बनावट व संरचना के आधार पर व्यक्ति के स्थिति को आसानी से समझा जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि प्र्याप्त आकार व संरचना वाले मकान मे जीवन निर्वाह करे। लेकिन भारत एक विकासशील देश है। यहॉ के अधिकांश निवासी गरीब है। और वह विभिन्न प्रकार की समस्याओ से ग्रसित है। भारत मे प्र्याप्त मात्रा मे आवास नही है। अधिकांश लोग अपर्याप्त आकार वाले या छोटी–मोटी कमरो मे जीवन निर्वाह कर रहे है। आज भी अधिकांश परिवार ऐसे है जो एक ही कमरे मे जीवन व्यतीत कर रहे है। और गॉवों मे आज भी अधिकांश मात्रा मे घास–फूस की बनी झुग्गी

झोपड़ियो मे रह रहे है। आवास की बनावट का व्यक्ति के व्यक्तित्व पर प्रत्यक्ष प्रभाव होता है। भारत सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा आवास की समस्या को सुलझाने का प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान मे सरकार ग्राम पंचायत के माध्यम से गॉवो मे आवास की समस्या का समाधान कर रही है। सरकार आवास के लिए 25000.00 पचीस हजार रुपया प्रदान कर रही है। तथा आवासो की मरम्मत के लिए 12000.00 बारह हजार रुपया दे रही है। लेकिन फिर भी आवास की समस्या बनी हुई है। आवास व्यक्ति के सामाजिक आर्थिक जीवन को प्रभावित किया है। जिन व्यक्तियो के मकान की बनावट पक्का है उनकी सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति उच्च है तथा उनमे जातीय और व्यवसायिक गतिशीलता विद्यमान है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे मकान की बनावट के आधार पर उत्तरदाताओ को दो भागो मे विभाजित किया है।

(1) कच्चा मकान

(2) पक्का मकान

मकान की बनावट और उत्तरदाताओ की संख्या–

म्कान की बनावट	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
कच्चा	172	57.33
पक्का	128	42.66
योग	300	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि कच्चा मकान वाले 57.33 प्रतिशत उत्तरदाता है तथा पक्का मकान वाले उत्तरदाताओ का प्रतिशत 42. 66 प्रतिशत है।

मुख्य व्यवसाय और उत्तरदाताओ की संख्या–

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आधारित है। भारत का अधिकांश परिवार कृषि से जुड़ा है। व्यवसाय मानव के जीविका के साथ साथ उसकी प्रस्थिति का द्योतक है। व्यवसाय के द्वारा ही व्यक्ति अपनी जीवन निर्वाह तथा अपना एवं अपने परिवार का भरण–पोषण करता है। तथा व्यवसाय के आधार पर ही व्यक्ति की प्रस्थिति का निर्धारण होता है। प्रारम्भ मे वर्ण व्यवस्था था जिसमे प्रत्येक वर्ण का व्यवसाय व कार्य भिन्न– भिन्न था। किन्तु वर्तमान मे इसका स्थान जाति व्यवस्था ने ले लिया है। जिसमे प्रत्येक जातियो के व्यवसाय को निश्चित किया गया है। तथा दूसरे के व्यवसाय को अपनाने पर प्रतिबन्ध लगाया गया है। इसके अन्तर्गत उच्च व्यवसाय करने वाले को उच्च माना गया है। तथा निम्न व्यवसाय करने वाले को निम्न माना गया है। यानि जाति व्यवस्था सम्पूर्ण समाज को उच्चता एवं निम्नता मे विभाजित करता है। किन्तु वर्तमान मे इस व्यवस्था मे शिथिलता आयी है। लोग अपने परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर नगरो मे जाकर उद्योगो तथा फैक्ट्रीयो मे कार्य करने लगे है। जिससे उनकी सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से सुधार हुआ है। भारतीय समाज व्यवस्था मे परिवारिक व्यवसाय जातिगत आधार पर निर्धारित होते है। लेकिन प्रौद्योगिकी विकास ने रोजगार के नये–नये अवसर उपलब्ध कराया है। जिससे जातिगत व्यवसाय का कोई स्थान नही है। व्यक्ति की योग्यता, कार्यक्षमता तथा विशेषीकरण की प्रक्रिया ने व्यवसायिक गतिशीलता को तीव्र कर दिया है।

मैने जातीय गतिशीलता के अध्ययन मे उत्तरदाताओ को व्यवसाय के आधार पर पॉच भागो मे विभाजित किया है।

(1) परम्परागत व्यवसाय

(2) कृषि

(3) नौकरी

(4) व्यापार

(5) अन्य

मुख्य व्यवसाय और उत्तरदाताओ की संख्या–

व्यवसायिक प्रस्थिति	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
परम्परागत	50	16.6
कृषि	82	17.3
नौकरी	69	23.0
व्यापार	86	28.0
अन्य	53	17.6

उपरोक्त तालिका में 40 ऐसे उत्तरदाता है जो एक या एक से अधिक व्यवसाय मे संलग्न है। हमने कुल अपने 300 उत्तरदाताओ मे ही प्रतिशत की गणना की है।

इस तालिका से ज्ञात होता है कि परम्परागत व्यवसाय करने वाले 16.6 प्रतिशत उत्तरदाता है। जबकि कृषि करने वाले उत्तरदाताओ का प्रतिशत 27.3 है। नौकरी करने वाले उत्तरदाताओ का प्रतिशत 23.0 है तथा व्यापार करने वाले 28 प्रतिशत उत्तरदाता है। जबकि अन्य व्यवसाय करने वाले उत्तरदाताओ का प्रतिशत 17.6 है। व्यापार करने वाले उत्तरदाताओ का प्रतिशत सर्वाधिक है।

आयगत प्रस्थिति और उत्तरदाताओं की संख्या–

आय के द्वारा ही व्यक्ति के जीवन स्तर का निर्धारण होता है। आय के माध्यम से व्यक्ति भौतिक सुख सुविधाओ की

प्राप्ति करता है। तथा आय का व्यक्ति के जीवन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध पाया जाता है। आय के आधार पर ही व्यक्ति के मान सम्मान का निर्धारण होता है। आधुनिक भौतिकवादी युग मे आय को सामाजिक प्रस्थिति का निर्धारक माना जाता है। इस प्रकार आय का सामाजिक–सांस्कृतिक क्षेत्र मे भी महत्वपूर्ण स्थान है। आय मान–सम्मान के साथ–साथ सामाजिक सहभागिता का भी निर्धारक है। भारतीय धर्म शास्त्रो मे अर्थ का भी उल्लेख किया गया है। इसलिए हिन्दू सामाजिक व्यवस्था मे आश्रम व्यवस्था का उल्लेख किया गया है। जिसमे गृहस्थ आश्रम का उल्लेख मिलता है। जिसे सभी आश्रमो मे श्रेष्ठ माना गया है। क्योकि तीनो आश्रमो के व्यक्ति इसी आश्रम पर निर्भर रहते है।

परम्परागत ग्रामीण समुदाय मे कृषि ही आय का प्रधानश्रोत रहा है। कृषि और कृषि जनित व्यवसाय से ही व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक प्रस्थिति और शक्ति संरचना का निर्धारण होता है आधुनिक गॉवो मे भू– सुधार, नीतियो, आरक्षण नीतियो और स्वतः रोजगार योजना जैसी आर्थिक नीतियो ने व्यक्ति को रोजगार के अवसर प्राप्त करने की प्रेरणा दी है। इसमे औद्योगिकरण व नगरीकरण की भूमिका महत्वपूर्ण है। इससे व्यक्ति परम्परागत व्यवसाय से विमुख हुआ है। जिससे व्यवसायिक गतिशीलता की मात्रा मे वृद्वि हुई है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे मैने आयगत प्रस्थिति के आधार पर उत्तरदाताओ को तीन भागो मे विभाजित किया है।

(1) निम्न आयगत प्रस्थिति– 0–20000.00 रुपये

(2) मध्यम आयगत प्रस्थिति– 21–60000.00 रुपये

(3) उच्च आयगत प्रस्थिति– 61000 से उपर

आयगत प्रस्थिति और उत्तरदाताओ की संख्या–

आयगत प्रस्थिति	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
निम्न 0–20000	126	42.0
मध्यम 21– 60000	130	43.33
उच्च 61000 से उपर	44	14.66
योग	300	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है की निम्न आय के 42 प्रतिशत, मध्यम आय के 43.33 प्रतिशत तथा उच्च आय के 14.66 प्रतिशत उत्तरदाता है।

आयुगत प्रस्थिति और उत्तरदाताओ की संख्या–

किसी भी समाज मे आयु तथा वर्ग का जनसंख्या संरचना से घनिष्ट सम्बन्ध है। भारतीय समाज मे इस तथ्य को प्राचीन काल से महत्व प्रदान किया जाता रहा है। आयु के आधार पर ही व्यक्ति अपने कार्यो का सम्पादन करता है। इसी तथ्य के आधार पर आश्रम व्यवस्था की स्थापना की गयी जिससे व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को 100 वर्ष मानकर उसे चार बराबर–बराबर भागो मे बॉट दिया गया और प्रत्येक को एक आश्रम की संज्ञा दे दी गयी। इसी आश्रमो मे व्यक्ति रहता हुआ अपने कार्यो का सम्पादन करता है। प्रत्येक आश्रम मे व्यक्ति के अलग–अलग कर्तब्य बताये गये है। इस प्रकार आयु का न केवल शारीरिक विकास से सम्बन्ध है। बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक परिपक्वता एवं निर्णय की क्षमता व परिस्थितियो का सामना करने से भी सम्बन्धित है। आयु मे वृद्वि के साथ– साथ व्यक्ति की शारीरिक मानसिक तथा बौद्विक

विकास होता है। एक अनुभवी व्यक्ति की समझ एवं समय के अनुरुप कार्य करने की प्रक्रिया मे अधिक पढ़े लिखे या नादान व्यक्ति को विषम परिस्थितियो मे कार्य सम्पादन कठिन होता है। आयु व्यक्ति की परिपक्वता और सामाजिक जीवन मे अनुभवो का परिचायक है। प्रायः अधिक आयु वर्ग के लोग अर्थात पुराने लोग परम्परावादी होते है जबकि नवीन लोग अर्थात युवा नवीन मूल्यो अविष्कारो तथा परिवर्तन का महत्व देते है। वास्तव मे आयुवर्ग के अनुसार व्यक्ति के व्यवहार प्रतिमान मूल्य आदि मे भिन्नता का भाव समाहित होता है। तथा युवा आधुनिकतावादी होते है। जो किसी भी क्षेत्र मे होने वाले परिवर्तन को शीघ्र स्वीकार करते है।

प्रायः ग्रामीण सामाजिक जीवन मे पुराने आयु वर्ग के लोग शहरो की अपेक्षा अधिक परम्परावादी होते अर्थात ये परम्पराओ से चिपके रहते है। इनमे परम्पराओ के विरुद्व तार्किकता और चिन्तन का अभाव होता है। नयी पीढी मे किसी समस्या या प्रचलित व्यवस्था के प्रति सोचने की प्रवृति अधिक पायी जाती है। ये आधुनिकतावादी होते है। इनके विचारो मे तार्किकता का विचार सन्निहित होता है। ये नवीन सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यो से अपने व्यवहार प्रतिमान का निर्धारण करते हैं। उग्र और परम्परा विरोधी सामाजिक चिन्तन और मानसिकता के परिपेक्ष्य ये उग्रगामी होते है। इस सन्दर्भ मे न्युकाम्ब का कालेज के विद्यार्थियो पर किया गया अध्ययन उल्लेखनीय है। कि वे सन्दर्भ समूह के आदर्शो को अस्वीकार कर देते है। यही नही वे इन आदर्शो के विपरित नवीन आदर्शो का निर्माण करते है।[3] वस्तुतः किसी भी अध्ययन मे आयुवर्ग एक महत्वपूर्ण कारक है। आयु के साथ–साथ व्यक्ति के व्यवहार प्रतिमान और वैचारिकीय मे भिन्नता होती है। अतः नवीन सामाजिक राजनैतिक परिवेश मे आयुवर्ग की महत्ता अधिक है।

मैने जातीय गतिशीलता के अध्ययन मे उत्तरदाताओ को आयु वर्ग के आधार पर उत्तरदाताओ को चार भागो मे विभाजित किया है। ताकि आयुवर्ग की जातीय गतिशीलता के सन्दर्भ मे भूमिका का गहन अध्ययन किया जा सके।

(1) युवा वर्ग-- इसके अर्न्तगत 30 वर्ष या इससे कम आयु के उत्तरदाताओ को सम्मिलित किया गया है।

(2) प्रौढ़-- इसके अर्न्तगत 30 वर्ष की आयु से लेकर 45 वर्ष से कम आयु के उत्तरदाताओ को सम्मिलित किया गया है।

(3) अति प्रौढ़-- इसके अर्न्तगत 45 वर्ष से अधिक और 60 वर्ष से कम आयु के उत्तरदाताओ को सम्मिलित किया गया है।

(4) वृद्ध-- इसके अर्न्तगत 60 वर्ष से अधिक आयु के उत्तरदाताओ को सम्मिलित किया गया है।

---

(3) न्युकाम्ब-- परसानिलिटी एण्ड सोशल चेन्ज न्युयार्क 1943 सोशल साइक्लोजी न्यूयार्क 1950 मर्टन आर0 के0 द्वारा सोशल श्योरी एण्ड सोशल स्ट्रक्चर मे उद्घृत 1968 पी 354

आयुगत प्रस्थिति और उत्तरदाताओ की संख्या–

आयुगत प्रस्थिति	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
युवा	133	44.3
प्रौढ़	65	21.6
अति प्रौढ़	46	15.3
वृद्ध	56	18.6
योग	300	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि युवा उत्तरदाता 44.3 प्रतिशत है तथा प्रौढ 21.6 प्रतिशत अति प्रौढ़ 15.3 प्रतिशत और 18.6 प्रतिशत वृद्ध उत्तरदाता है।

राजनीतिक सहभागिता और उत्तरदाताओ की संख्या–

आजकल राजनीति धन प्राप्ति तथा भौतिक सुख सुविधाओ को प्राप्त करने का एक साधन बन गया है। वह सत्ता प्राप्त करने के लिए किसी भी कार्य को अंजाम देने मे संकोच नही कर रहे है। वर्तमान समय मे सत्ता प्राप्ति लक्ष्य बन गया है। और विजयी होने के बाद नेतृत्व कर्ता इन प्राप्तियो मे लग जाते है। जिसका परिणाम यह होता है कि अपने सेवा काल के दौरान सार्वजनिक कार्यो की ओर ध्यान नही देते है।

वर्तमान मे किसी भी समाज मे चाहे वह हिन्दू समाज हो या मुस्लिम या सिख या ईसाई सभी मे राजनीति की लहर दौड रही है। सभी समाजो मे राजनीति एक सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक

विकास का महत्वपूर्ण कारण माना जा रहा है। और वास्तव मे यह अध्यन मे देखा गया है। कि जो व्यक्ति राजनीतिक क्रियाओ मे भाग ले रहे है उनकी सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति मे उन्नयन हुआ है। और यह व्यवसायिक गतिशीलता ने जातीय गतिशीलता के लिए व्यक्ति को प्रेरित किया है।

मैने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे राजनीतिक सहभागीता के आधार पर उत्तरदाताओ को तीन श्रेणीयो मे विभाजित करके अध्ययन करने का प्रयास किया है।

(1) अति जागरुक

(2) मध्यम जागरुक

(3) सामान्य जागरुक

उत्तरदाताओ की राजनीतिक सहभागिता और उत्तरदाताओ की संख्या–

उत्तरदाताओ की राजनीतिक जागरुकता	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
अति जागरुक	40	13.3
मध्यम जागरुक	210	70.0
सामान्य जागरुक	50	16.6
योग	300	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि अतिजागरुक उत्तरदाताओ का प्रतिशत 13.3 है। मध्यम जागरुक 70 प्रतिशत तथा सामान्य जागरुक उत्तरदाता 16.6 प्रतिशत है।

पत्र पत्रिकाओ और उत्तरदाताओ की संख्या–

व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र मे पत्र पत्रिकाओ का महत्वपूर्ण स्थान है। पत्र पत्रिकाओ के माध्यम से व्यक्ति मे नवीन संचार का उद्‌भव हुआ है। तथा पत्र पत्रिकाए यात्रा मे व्यक्ति के लिए मित्र के रुप प्रकट होती है। जहा कोई परिचित नही होता है तथा अकेले मे पत्र पत्रिकाओ के द्वारा ही व्यक्ति अपने सामाजिक आर्थिक विकास करने मे सफल हुआ है।

अध्ययन मे यह देखा गया है कि जो व्यक्ति पत्र पत्रिकाओ का सहयोग लेता या उसका अध्ययन करता है उनमे आधुनिकता का गुण समाहित है। और आधुनिकता ही मानव जीवन को भौतिक सुख सुविधाओ की ओर उन्मुख किया है। और ये भौतिक सुख सुविधाए मानव के सामाजिक, आर्थिक विकास को इंगित करता है और यह सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति मे व्यक्ति को व्यवसायिक तथा जातीय गतिशीलता की ओर प्रेरित किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे मैने पत्र–पत्रिकाओ के आधार पर उत्तरदाताओ को पॉच श्रेणियों मे विभाजित किया है।

(1) दैनिक जागरण

(2) आज

(3) अमर उजाला

(4) कौमी आवाज

(5) आवाज मुल्क

<u>पत्र पत्रिकाओ और उत्तरदाताओ की संख्या–</u>

समाचार पत्र पत्रिकाएं	उत्तरदाताओ की संख्या	प्रतिशत
दैनिक जागरण	81	27.0
आज	48	16.0
अमर उजाला	62	20.6
कौमी आवाज	67	22.3
आवाज मुल्क	42	14.0
योग	300	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि दैनिक जागरण पढने वाले 27 प्रतिशत उत्तरदाता है। जबकि आज दैनिक पत्रिका पढ़ने वाले 16 प्रतिशत उत्तरदाता है। अमर उजाला पढ़ने वाले 20.6 उत्तरदाता है। जबकि कौमी आवाज पढने वाले 22.3 प्रतिशत उत्तरदाता है। तथा सबसे कम आवाज मुल्क पढने वाले उत्तरदाताओ का प्रतिशत है। जो 14 प्रतिशत है तथा सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला दैनिक जागरण का प्रतिशत है।